जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक ११ वा ❖ जुलै २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०८०

या अंकात | पान नं.

- तप साधना से मिटे, दोष – दु:ख तत्काल १५
- सुक्ति से मुक्ति : परोपकार १७
- संघ की आधारशिला है संगठन समर्पण और सहनशीलता १९
- जैन लडकियाँ क्यों दुसरे समुदाय में जाती है, जबकी.... २४
- कव्हर तपशील २५
- पुणे शहर चारों संप्रदाय चातुर्मास सूची ३१
- श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों की चातुर्मास सूची ३५
- महाराष्ट्र प्रांत श्रमण संघीय चातुर्मास सूची ३६
- भारतीय संस्कृती में जैन धर्म का योगदान ४०
- मोक्ष मार्ग के २१ कदम : शील ३ ४३
- मंत्राधिराज प्रवचन सार ५९
- प्रेम की मीठी नजर, मिटे द्वेष का जहर ६२
- हास्य जागृति ६५
- वैराग्य वाणी : ४, ५ ६७
- नफरत Vs प्यार ६९
- महावीर युनिर्व्हसिटी, अहमदनगर ७१
- संचेती ट्रस्ट, पुणे – रेनकोट वाटप ७२
- C.A. अशोककुमार पगारिया – पुरस्कार ७२
- दि पूना मर्चन्ट चेंबर – पुरस्कार ७३
- श्री आनंदजी चोरडिया – कॅनडा ७३
- सुविचार ७५
- अरिहंत जागृति मंच, पुणे – निबंध स्पर्धा ७४
- सौ. शुभांगी कात्रेला – पुस्तक प्रकाशन ७६
- भाग्योदय ट्रान्सपोर्ट, पुणे – पुरस्कार ७६
- गांधी हॉस्पिटल, छ. संभाजीनगर–उद्घाटन ७७
- एनएसजेबी सर्वोत्कृष्ठ महाविद्यालय ७७
- माणिकचंद उद्योग समूह – महाब्रॅन्ड ८३
- श्री. प्रकाशजी धारीवाल – पुरस्कार ८३
- बोथरा उद्योग समूह – महाबॅन्ड ८३
- श्री. राजेंद्र सुराणा – पुरस्कार ८३
- सॉलिटेयर ग्रुप – वृक्षारोपण, पुणे ८४

- श्री. राजेश शहा, पुणे – सन्मान ८४
- श्री. संघवी बेदमुथा – पुरस्कार ८४
- श्री. गांधी गुरुजी संस्था – निबंध स्पर्धा ८५
- गौतम निधी फाऊंडेशन – रक्तदान शिबीर ८७
- जागृत विचार ८७
- चि. कुणाल देसर्डा, पुणे ८९
- जीत परिवार – शैक्षणिक सहायता ८९
- समग्र जैन चातुर्मास सूची ९१
- पौषध पर्व – पुणे ९१
- लोढा धाम – उपाधन तप ९१
- डॉ. दिलीप धींग – युगधारा सन्मान ९२
- अंकुर ने लगाई छलांग ९३
- आनंदऋषीजी मेडिकल सेंटर, पुणे ९५
- सुयर्दत्त ग्रुप – महाब्रॅन्ड ९५
- सुरक्षा २ : प्रतिदिन हर रस्ते को देखिए ९७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये. • Google Pay - M. 9822086997

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/Google Pay - M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

तप : साधना से मिटें, दोष–दु:ख तत्काल

लेखक : राष्ट्रसंत प्रवर्तक श्री गणेशमुनि शास्त्री

तपस्या से अन्तर मन, कमल–सा खिल जाता है ।
तपस्या से जीवन उत्थान का सूत्र मिल जाता है ।
सूर्य के ताप से तो मात्र हिमखण्ड ही पिघलता है ।
पर तप के ताप से तो, पाषाण तक पिघल जाता है।।

तप पर चर्चा करते हुए मन हर्षित एवं आनन्दित है, क्योंकि आज तप- दिवस मनाया जा रहा है। भगवान महावीर ने अपने एक प्रवचन में कहा–

'भव कोडी संचियं कम्मं, तवसा णिज्जरिज्जइ'।

अर्थात्–करोड़ों जन्मों के संचित कर्म तपस्या से जीर्ण–शीर्ण होकर नष्ट हो जाते हैं। तप जीवन की महान साधना है। तप का अनुष्ठान हजारों- लाखों वर्षों से अविकल रूप से चला आ रहा है। तप के आचरण से अनेकानेक भव्य जीवों ने अपना उद्धार किया है, कर रहे हैं और भविष्य में भी करते रहेंगे। यह एक शाश्वत सत्य है। 'यहाँ एक बात अवश्य कहूँगा कि–'तप की साधना आत्मा को निखारने में जितनी सहायक है, उतनी ही कठिन भी है ! तप हर व्यक्ति नहीं कर सकता और यह हर किसी के बस की बात भी नहीं है। इस सम्बन्ध में एक क्षणिका है–

एक बन्धु से मैंने कहा–
तपश्चर्या कभी निष्फल नहीं जाती,
समय है– आप भी लाभ लीजिए ।
वे बोले– घर जाकर सोचूँगा गुरुदेव,
पर, आज तो मुझे छोड़ दीजिए ।

हाँ तो, जिसका मनोबल आत्मबल मजबूत एवं सुदृढ़ है वही तप–क्षेत्र में प्रवेश पा सकता है। तप किया नहीं जाता जिया जाता है। तप में जीना आत्मा में जीना होता है, जो आत्मा में जीता है, विवेक में जीता है उसी का तप सार्थक व सम्यक् होता है। शरीर को तपाना अलग बात है, किन्तु शरीर के साथ आत्मा में रहे हुए कषायों का उपशमन, कषायों का निर्मूलन करना तप की बहुत बड़ी उपलब्धि कही जाती है।

❊ दो संस्कृतियाँ

वैसे अपने देश में दो संस्कृतियाँ प्रमुख रही है। एक श्रमण संस्कृति और दूसरी ब्राह्मण संस्कृति । एक मुनि संस्कृति और दूसरी ऋषि संस्कृति । दोनों के बारे में इतिहासकारों ने जमकर लिखा है और प्रकाश डाला है। दोनों संस्कृतियाँ महान रही है, इसमें कोई संदेह नहीं ।

श्रमण- मुनि प्रायः पर्वतों पर तप करते थे और ब्राह्मण ऋषि नदी के तटों पर तप करते थे। ऋषियों का जीवन नदी के प्रवाह की तरह चला, जबकि मुनियों का जीवन पर्वतों की तरह ऊपर की ओर बढ़ता रहा है। पर्वतों पर तीर्थंकर ऋषभदेव, महावीर आदि ने तप किया जबकि नदी के तटों पर व्यास जैसे ऋषि पुत्रों ने तप किया था। इतिहास साक्ष्य है।

वैसे सभी धर्मों में तप का उल्लेख देखने को मिलता है। कोई ऐसा धर्म नहीं कि उनमें तप को महत्त्व नहीं दिया गया हो, फिर भी जैन धर्म में तप अपनी अलग ही पहचान, अलग ही विलक्षणता लिए हुए हैं।

❊ तप के दो भेद

भगवान महावीर ने तप के दो प्रकार बताये हैं। एक बाह्य तप है तो दूसरा आभ्यंतर तप है। दोनों के छह–छह भेद हैं। छह बाह्य और छह आभ्यंतर, तप के कुल बारह भेद माने गये हैं। अनशन, ऊनोदरी, भिक्षाचरी, रस परित्याग, कायक्लेश और प्रतिसंलीनता ये छह बाह्य तप हैं। इसी प्रकार प्रायश्चित्त, विनय, वैयावृत्य, स्वाध्याय, ध्यान और कायोत्सर्ग ये छह आभ्यंतर तप हैं।

कर्मों की निर्जरा करने में अनशन तप का विशेष महत्त्व है। यही कारण है कि भगवान आदिनाथ ऋषभदेव ने बारह महीने पूरे एक वर्ष का तप किया तो भगवान पार्श्वनाथ ने छह महीने का भगवान महावीर ने पाँच माह पच्चीस दिन का कठोर तप किया था। इन्हीं के शासनकाल में धन्ना अणगार जैसे उग्र तपस्वी थे, जिनका तप इतना महान था कि उनके 'तप-तंत्र' की विधि- व्याख्या भगवान महावीर के मुखारविंद से श्रवण कर मगध सम्राट श्रेणिक आश्चर्य चकित हुए बगैर न रह सका। आगम-पृष्ठों पर धन्ना अणगार के साथ अन्य कई तपस्वियों का तप स्वर्णाक्षरों में मण्डित है जो देखते ही बनता है। जैन दर्शन ने अज्ञान तप को महत्त्व नहीं दिया। 'देह दुक्खं महाफलं' की बात व्यर्थ की नहीं यथार्थ की है। महावीर ने कहा- देह का दमन एक तप है और वह महाफल दायक है। जिस तप में आत्मा की अनुभूति, कषायों की क्षीणता, मन में सात्विकता का आभास न हो तो उस तप की क्या महत्ता है ? ऐसी स्थिति में बड़े-बड़े अनशनों का भी कोई मूल्य नहीं रह जाता। विवेक पुरस्स, ज्ञान- ज्योति को प्रज्वलित रखते हुए जो तप साधा जाता है। या किया जाता है उसे ही सचमुच तप की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। शेष सभी अज्ञान तप हैं, जो संसार बेल की अभिवृद्धि करने वाले हैं। ऐसे तप जैन दर्शन को कदापि मान्य नहीं रहे हैं।

❊ तप का उद्देश्य : कर्म निर्जरा

प्रस्तुत संदर्भ में एक संस्मरण याद आ रहा है। एक था गुरु । एक था शिष्य । दोनों एक नगर में वर्षावास अर्थात् चातुर्मास हेतु पहुँचे। वर्षावास का शुभारंभ हुआ। शिष्य ने गुरु से पूछा - गुरुदेव ! मेरे लिए क्या आज्ञा है ? गुरु ने कहा- प्रवचनादि का सारा कार्य मैं संभाल लूँगा, तुम तप करो और जीर्ण करो। शिष्य अनशन तप करने के लिए उपयुक्त स्थान पर चला गया और तपस्या प्रारम्भ कर दी।

जब एक माह पूर्ण हो गया तो शिष्य गुरु के समीप जाकर बोला- गुरुदेव ! एक माह का तप पूर्ण हो चुका है। अब मेरे लिए क्या आदेश है ?

गुरु ने कहा अभी और जीर्ण करो।

शिष्य ने दूसरे माह की तपस्या शुरु कर दी। दो माह का तप भी पूर्ण हो गया तो शिष्य ने पुनः पूछा- गुरुदेव ! अब क्या आदेश है ?

गुरु ने कहा- 'और जीर्ण करो।'

शिष्य, मन ही मन क्रोध में तमतमाता हुआ फिर से तप में संलग्न हो गया। जब तीसरे माह का तप भी पूर्ण हो गया तो इन तीन महीनेके तप से शिष्य की काया अत्यन्त क्षीण-कृश हो गई थी। रक्त-मांस सूख गया था। उँगलियाँ बहुत पतली हो गई हाथों की कलाइयाँ भी डंठल जैसी पतली पड़ गई। तप से क्षीण-कृश काया को लेकर शिष्य गुरु के समीप जा पहुँचा और पूछा-

'गुरुदेव! तीन महीने का तप पूर्ण हो चुका है। अब मेरे लिए क्या संदेश है ?

गुरुदेव बोले- 'और जीर्ण करो।'

यह सुनते ही शिष्य के धैर्य का बांध टूट गया। वह क्रोधावेग में थर- थर कांपने लगा और बोला- अब क्या जीर्ण करूँ ! मेरे शरीर में बचा ही क्या है, जो जीर्ण करूँ अब तो मुझे मारकर ही जीर्ण करोगे...!'

गुरुदेव होठों पर मंद-मंद मुसकराहट लाते हुए बोले- वत्स, तूने कुछ भी तो जीर्ण नहीं किया। केवल काया को जीर्ण किया है। काया को दंड दिया है। तेरे भीतर कषाय तो ज्यों के त्यों सघन हैं। तेरा क्रोध तो किंचित् भी जीर्ण नहीं हुआ है 'जीर्णकरो' का अर्थ तूने शरीर को सुखाना ही समझा। यदि तू मेरी बात का आशय समझ जाता तो एक मासखमन तो क्या एक उपवास से ही तेरा कल्याण हो जाता। अब तू जो ठीक समझे...वही कर...! मैं तो अब भी यही कहूँगा कि जीर्ण करो...!

शिष्य गुरु के चरणों में गिरकर अपने कृत्य के प्रति

पश्चात्ताप करने लगा।

इस प्रसंग पर काव्य की चार पंक्तियाँ मुझे याद आ रही है–

तपस्या से मन का मैल धुल जाया करता है ।
कर्मों का बन्धन भी खुल जाया करता है ।
तपस्या तो तन के लिए वह आग है जिसमें ।
कषाय का कूड़ा–कचरा जल जाया करता है ।

हाँ तो, तप चाहे छोटा हो या बड़ा, कैसा भी हो पर उसमें विवेक दृष्टि, ज्ञान दृष्टि अवश्य होनी चाहिए विवेक व ज्ञानयुक्त किया गया तप कभी व्यर्थ नहीं जाता। तप तो शांति प्रदाता है जन्म मरण की परम्परा को मिटाने वाला दिव्यास्त्र है। ऐसे तप- अनुष्ठान में आप सभी श्रद्धालुगण सहभागी बनकर अनंत कर्म-निर्जरा का सुख-सौभाग्य प्राप्त करें। बस, इसी मंगल मैत्री भाव के साथ दो पंक्तियाँ बोलकर अपने वक्तव्य को विराम देना चाहूँगा–

तपः साधना से मिटे, दोष–दुःख तत्काल ।
कर्म जीर्ण होते सकल, कटता है भव जाल ।। ●

सुक्ति से मुक्ति

परोपकार

लेखक : आचार्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा

* परोपकार के लिए प्राणों का उत्सर्ग करना पडे, तो भी हँसते-हँसते कर देना चाहिए ।
* जिसमें परोपकर वृत्ति होती है, वही व्यक्ति महान बनता है ।
* जो दूसरों के हित में अपना हित देखता है, उसे कभी कोई कष्ट नहीं होता ।
* दूसरे को उपर उठाने के लिए झुकिए, मुडिए; किन्तु खुद नीचे मत गिर जाइए, पतन से बचिए ।
* परोपकार कभी निष्फळ नहीं होता, क्रूर पशु भी उपकार नहीं भूलते ।
* जीवन वही सार्थक है, जो अगरबत्ती की तरह स्वयं जलकर दूसरों को सुंगन्ध देता है ।
* परोपकार ही जीवन को महान बनाता है ।
* जो व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से परहित के लिए कार्य करता है, वही संसार में महानतम व्यक्ति है ।
* अपनी भलाई, अपना कल्याण, अपनी उन्नति सभी चाहते हैं, किन्तु जो उत्तम पुरुष होते हैं, वे स्वयं कष्ट उठाकर भी दूसरों का कल्याण चाहते हैं ।
* विपत्तियों से संघर्ष करने पर ही अनुभव की ज्योति मिलती है । संकटों का सामना करने पर ही यश की सौरभ फैलती है । और परहित समर्पित होने पर ही विश्व-प्रेम की महक फूटती है ।
* नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते, बादल अपने द्वारा बरसाये हुए जल से उत्पन्न धान का उपभोग स्वयं नहीं करते, वस्तुतः सज्जनों की सम्पदाएँ परोपकार के लिए ही होती हैं ।
* अपने लिए सभी जीते हैं, किन्तु जीवन तो उन्हीं का धन्य है जो दूसरों के लिए जीते हैं ।
* मनुष्य किसी को एक पैसा उधार देकर भी सदा उसे याद रखता है, किन्तु आश्चर्य है इस जगत में पृथ्वी, पानी, अग्नि एवं आकाश से सम्पूर्ण जीवन तत्त्वों को उधार लेकर भी, उनका परोपकार भूल गया है ।
* संसार में नाम उसी का हो सकता है, जिसने नाम के पीछे दौडना छोड दिया हो ।
* जो मनुष्य किसी अधिकार को पाकर भी पर-उपकार नहीं करता है, उसके अधिकार में से 'अ' निकल जाता है और 'क' दुहरा हो जाता है अर्थात अधिकार, धिक्कार बन जाता है । ●

कव्हर तपशील - जुलै २०२३

❖ **माणिकचंद उद्योग समूह – महाब्रॅण्ड**
पुणे येथील माणिकचंद उद्योग समुहाचे अध्यक्ष श्री. प्रकाशजी रसिकलालजी धारीवाल व चि. आदित्य धारीवाल यांना महाराष्ट्राचा महाब्रॅण्ड २०२२ पुरस्कार माजी मुख्यमंत्री श्री. सुशीलकुमारजी शिंदे यांच्या हस्ते मुंबई येथे प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **बोथरा उद्योग समूह – महाब्रॅण्ड**
अहमदनगर येथील बोथरा उद्योग समुह - पारस पाईप व वॉटर टैंक यांना महाराष्ट्राचा महाब्रॅण्ड २०२२ पुरस्कार माजी मुख्यमंत्री श्री. सुशीलकुमारजी शिंदे यांच्या हस्ते मुंबई येथे प्रदान करण्यात आले. श्री. प्रेमचंदजी, श्री. संतोषजी, श्री. प्रणेश, श्री. गौरव, श्री. रोहन बोथरा यांनी पुरस्कार स्विकारला. (बातमी पान नं. ८३)

❖ **श्री. आनंदजी चोरडिया – कॅनडा**
पुणे : भारतातील व विदेशातील प्रसिद्ध सुहाना ग्रुपचे संचालक श्री आनंदजी राजकुमारजी चोरडिया यांना टोरंटो कॅनडा येथील भारत आणि कॅनडा यांच्यातील व्यापार आणि गुंतवणूक प्रोत्साहन कार्यक्रमात विशेष आमंत्रण करण्यात आले. या कार्यक्रमास भारताचे केंद्रिय मंत्री श्री पियुषजी गोयल हे प्रमुख पाहुणे म्हणून उपस्थितीत होते. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **सुर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट – महाब्रॅण्ड**
पुणे येथील सुर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक व अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी चोरडिया व उपाध्यक्ष सौ. सुषमा चोरडिया यांना महाराष्ट्राचा महाब्रॅण्ड २०२२ हा पुरस्कार महाराष्ट्राचे उपमुख्यमंत्री श्री. देवेंद्रजी फडणवीस यांच्या कडून प्रदान करण्यात आला.
(बातमी पान नं. ९५)

❖ **दि पूना मर्चन्ट चेंबर – पुरस्कार**
व्यावसायिक आणि सामाजिक क्षेत्रातील अतुलनीय योगदानाबद्दल दि. पूना मर्चंटस चेंबरला अत्यंत प्रतिष्ठेच्या राज्यस्तरीय बिझनेस एक्सप्रेस श्री पुरस्काराने सांगली येथे गौरवण्यात आले. चेंबरचे अध्यक्ष राजेंद्र बाठिया यांनी आपल्या सहकाऱ्यांसमवेत हा पुरस्कार स्वीकारला. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **C.A. अशोककुमारजी पगारिया – पुरस्कार**
जैन सीए फाऊंडेशन, मुंबई या संस्थेच्या वर्धापन दिनानिमित्त आयोजित कार्यक्रमात सीए डॉ. अशोककुमारजी पगारिया यांना समाजसेवा क्षेत्रातील उल्लेखनीय योगदान या पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. ७२)

❖ **महावीर युनिव्हर्सिटी भूमिपूजन – अहमदनगर**
अहमदनगर येथे जैन सोशल फेडरेशनच्या वतीने २३ एकर जागेत वर्धमान महावीर युनिव्हर्सिटीची उभारणी केली जात आहे. या युनिव्हर्सिटीच्या कामाचे भूमिपूजन राष्ट्रीय अल्पसंख्याक शैक्षणिक समिती चे अध्यक्ष जस्टिस नरेंद्र कुमार जैन यांच्या हस्ते झाले.

महाराष्ट्र प्रवर्तक पूज्य कुंदनऋषीजी महाराज, पूज्य आदर्शऋषीजी महाराज, विमलाजी जैन, उद्योजक प्रकाशजी धाडीवाल, उद्योजक रमणलालजी लुंकड, उद्योजक पेमराजजी बोथरा,

संतोषजी बोथरा, सतिशजी बोथरा आदि उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ७१)

❖ **अरिहंत जागृती मंच, पुणे – निबंध स्पर्धा**
भ. महावीर जन्म कल्याणक निमित्ताने अरिहंत जागृती मंचने निबंध स्पर्धा आयोजित करण्यात आली होती. या स्पर्धेच्या पारितोषिक वितरण समारंभात प्रमुख अतिथी म्हणून डॉ. श्रीपालजी सबनीस, डॉ. C.A. अशोकजी पगारिया, प्रा. डॉ. कमलकुमार जैन इ. मान्यवर उपस्थित होते (बातमी पान नं. ७४)

❖ **सौ. शुभांगी कात्रेला – पुस्तक प्रकाशन**
शुभांगी कात्रेला लिखित आणि संवेदना प्रकाशन निर्मित 'आयुष्याच्या हिंदोळ्यावर' या ललित लेखसंग्रहाचे आणि 'आयुष्य जगताना' या पुस्तकाच्या द्वितीय आवृत्तीचे प्रकाशन प्रा. प्रवीणजी दवणे यांच्या हस्ते करण्यात आले. जैन कॉन्फरन्स महिला अध्यक्ष प्रा. सुरेखाजी कटारिया, ज्येष्ठ साहित्यिक आणि शिक्षणतज्ज्ञ न. म. जोशी, प्राचार्य प्रकाशजी कटारिया, कांतीलालजी कात्रेला, डाळिंबीबाई कात्रेला, सुभाषजी ललवाणी आदी मान्यवरांची प्रमुख उपस्थित होते. (बातमी पान नं. ७६)

❖ **सॉलिटेयर ग्रुप, पुणे – वृक्षारोपण**
जागतिक पर्यावरण दिनाचे औचित्य साधत प्रतिवर्षाप्रमाणे याही वर्षी सॉलिटेअर व अर्जुन धर्मादाय न्यास यांच्या संयुक्त विद्यमाने पुण्यातील महाळुंगे परिसरात वृक्षारोपणाचा कार्यक्रम पार पडला. या वृक्षारोपणाच्या कार्यक्रमाची सुरुवात सौ. आशा अशोकजी चोरडिया यांच्या हस्ते वृक्ष लावून झाली. (बातमी पान नं. ८४)

❖ **गांधी हॉस्पिटल – छ. संभाजीनगर – उद्घाटन**
छत्रपती संभाजीनगर / औरंगाबाद शहरातील गांधी हॉस्पिटल मल्टिस्पेशालिटी हेल्थ केअर सेंटर येथे गॅस्ट्रोएंटेरोलॉजी व निओनॅटोलॉजी विभागाचे चे केंद्रीय अर्थ राज्यमंत्री डॉ. भागवत कराड यांच्या हस्ते उदघाटन करण्यात आले.

सहकारमंत्री अतुलजी सावे, पालकमंत्री संदीपानजी भूमरे, आ. प्रदीपजी जैस्वाल, आ. प्रशांतजी बंब, महापालिकेचे माजी आयुक्त डॉ. पुरुषोत्तमजी भापकर, महापालिकेचे आरोग्य वैद्यकीय अधिकारी डॉ. पारसजी मंडलेचा, डॉ. राजेंद्रजी गांधी, डॉ. आशिष गांधी, डॉ. गुंजनजी गांधी इ. मान्यवर उपस्थित होते.
(बातमी पान नं. ७७)

❖ **पंतप्रधान मोदीजी व कुणाल देसर्डा – जपान**
भारताचे पंतप्रधान श्री. नरेन्द्रजी मोदी जपान दौऱ्यावर गेले असता त्यांनी चि. कुणाल किशोरजी देसर्डा यांचे कौतुक करून पाठ थोपटली. (बातमी पान नं. ८९)

वर्धमान टायर्स

अजय अशोक चंगेडीया
मो.: ९८२२५४९२५५

MRF | GOODYEAR | CEAT | MICHELIN A better way forward | BRIDGESTONE | APOLLO | JKTYRE

सर्व कंपन्यांचे टायर्सचे अधिकृत विक्रेते

• कॉम्प्युटराईज्ड • व्हिल अलाईनमेन्ट • व्हिल बॅलेन्सिंग • ऑटोमॅटीक टायर चेंजर

धरती चौक, हातमपुरा, अहमदनगर, फोन : ०२४१-२३४६३५५, २३२२९८०

शाखा : बिशप कॉलनी, मकासरे हेल्थ क्लब समोर, टी.व्ही.सेंटर रोड, सावेडी, अहमदनगर.

वर्धमान एजन्सी – हिरो स्पेअर्सचे अहमदनगर जिल्ह्याचे होलसेल डिस्ट्रीब्युटर्स

एम.आय.डी.सी. अहमदनगर. मोबाईल : दिपक – ९३७२६७३५०५